ISSN : 2583-2948

गिलहरी....

तेजेन्द्र शर्मा

वरिष्ठ साहित्यकार, ब्रिटेन

रहती है मेरे घर के पीछे
बाग़ के एक दरख़्त पर
उछलती, कूदती, फरफराती
एक डाल से दूसरी पर
बंदरिया सी छलांग लगाती
ये मेरे बाग़ की गिलहरी है।

इस देश के गोरे नागरिकों की
करती है नकल, अपनी
फ़रदार पूंछ को हिलाती है
अलग अलग दिशा में नचाती है
चेहरे पर रोब लाए
करती है प्रदर्शन, अपनी
अमीरी का, अपनी सुन्दरता का
हां, ये मेरे बाग़ की गिलहरी है।

अपने आगे के पैरों को देती है
हाथों सी शक्ल और वैसा ही काम
कुतरती है सेब, मेरे ही बाग़ के
ऐंठती हुई करती है अठखेलियां
पेड़ों से टकराती ब्यार से
उफ़! ये मेरे बाग़ की गिलहरी।

ISSN : 2583-2948

जब जी चाहे पहुंच जाती है

मेरे ज़ीने पर, मेरे स्टोर में

कुतर डालती है, दिखाई देता है जो भी

मैं, बस सुनता हूं आवाज़ें

घबराता हूं, मांगता हूं दुआ

पुस्तकों की ख़ैरियत की।

मुझे भक्त बना देती है

ये जो है मेरे बाग़ की गिलहरी।

एक दिन सपने में मेरे आ खड़ी होती है

चेहरे पर दंभ, रूप से सराबोर

गदराया बदन, दबी मुस्कुराहट

आज आने वाली है उससे मिलने

उसकी दूर की एक रिश्तेदार!

उस शहर से जहां बीता था मेरा बचपन

हां वो भी तो एक गिलहरी ही है।

ग़रीबी के बोझ से दबी

सिमटी, सकुचाई, शरमाई

अपने सलोने रंग से सन्तुष्ट

संग लाई है अपने अमरूद

बस वही ला सकती थी

महक मेरे शहर की मिट्टी की

पाता हूं वही महक कभी अमरूद में

तो कभी उसमे जो मेरे शहर की गिलहरी है।

ISSN : 2583-2948

मेरे बाग़ की गिलहरी को नहीं भाती
गंवई महक अमरूद की, या फिर
मेरे शहर की मिट्टी की वो गंध
जो मेरे शहर की गिलहरी ले आई है
अपने साथ, अपने शरीर अपनी सांसों में।
वह रखती है अपनी मेहमान के सामने
केक, चीज़ और ड्राई फ़्रूट
कितनी भी खा ले, पूरी है छूट
कितने बड़े दिलकी मालकिन है
वो जो मेरे बाग़ की गिलहरी है।

मेरे शहर की गिलहरी सीधी है सादी सी
निकट है प्रकृति के, सरल और मासूम
बस खाती है पेड़ों के फल, कैसे पचाए
केक, चीज़ और ड्राई-फ़्रूट
देखती है, मुस्कुराती है, पूछती है हाल
अपनी मेज़बान के, उसके परिवार के।
परिवार यहां नहीं होता, सब रहते हैं
अलग अलग, यह मस्त देश है
ऊंचे कुल की दिखती है वो
जो मेरे बाग़ की गिलहरी है।

"सुनो, तुम यह सब नहीं खाती हो
इसी लिये सेहत नहीं बना पाती हो
मुझे देखो, कितना ख़ूबसूरत देश है मेरा
कैसा है मेरा स्वरूप, रंग रूप।.. देखो

ISSN : 2583-2948

मेरे बाग़ में कितने सुन्दर पेड़ हैं

रंग बिरंगी पत्तियों वाले पौधे!

यहां का हरा रंग कितना गहरा है!

यहीं आ बसो, यहां है कितना सुख

कितनी शान, मौज है मस्ती है।"

आत्ममुग्ध हो जाती है, जो

मेरे बाग़ की गिलहरी है।

चुप नहीं हो पाती है, जारी है

बोलना उसका और इठलाना।

मेरे देश में इन्सान से अधिक

होती है परवाह हमारी

यही है वो देश जहां कभी

अस्त नहीं होता था सूर्य

जब कभी उदय होता है पूर्व में

तब भी चमकता है मेरा यह

पश्चिम का देश। और चमकने

लगता है चेहरा, मेरे बाग़ की गिलहरी का।

शांत किन्तु दृढ़ आवाज़ में

देती है जवाब, गिलहरी मेरे शहर की।

माना कि तुमु हो बहुत सुन्दर और सुगठित

धन और धान्य से भरपूर है शहर तुम्हारा।
तुम्हारे देश में हैं सुख, सुविधाएं और आराम।

देखो मेरी ओर, देखो मेरे इस साधारण बदन को,

यह तीन उंगलियां जिसकी हैं

उसका नाम है राम! इस तरह देती है सुख

मुझे असीम, वो जो मेरे शहर की गिलहरी है।